सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन दो शब्दों से मिलकर बना है — सामाजिक तथा परिवर्तन। 'सामाजिक' शब्द की व्याख्या करते हुए विख्यात समाजशास्त्री फिशर लिखते हैं कि समाज के सम्बन्धों के जाल को ही 'सामाजिक' कहा जाता है। दूसरे शब्दों में समाज की प्रत्येक घटना-सम्बन्धों को 'सामाजिक' की परिभाषा दी गई है। इसी प्रकार सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है — समाज की घटनाओं, संगठन, स्वरूप, सम्बन्धों तथा परम्पराओं की भूतकालीन अवस्थाओं की नई अवस्था प्राप्त होना या प्रदान करना।

डेविस ⇒ "समाज के कार्य एवं स्वरूप में होने वाले परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन कहलाते है।"

जिन्सबर्ग ⇒ "सामाजिक परिवर्तन से मेरा आशय सामाजिक संरचना, अर्थात समाज का आकार, संगठन, अंगो का सन्तुलन या इसके संगठन के प्रकारों में परिवर्तन से है।"

डासन तथा गेटिस ⇒ "सांस्कृतिक परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है क्योंकि समस्त संस्कृति अपने उद्गम, अर्थ तथा प्रयोग में सामाजिक ही होती है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन समाज की एक अनिवार्यता है अर्थात प्रत्येक समाज में परिवर्तन अवश्य होते है। इन परिवर्तनों को स्वयं समाज भी रोक सकता है इसलिए विद्वानों ने इन परिवर्तनों को समाज का एक अनिवार्य अंग माना है।

Scanned with CamScanner